Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252002

भारतीय सामाजिक ज्वलंत समस्याओं के प्रति फिल्मों की भूमिका

डॉ.ममता राठोर[1] ,डॉ. जाकिर हुसैन[2]
[1,2]व्याख्याता. बीएड कॉलेज झालावाड़

सारांशिका :

मानव समाज के इतिहास को यदि गहराई से देखा जाए तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह विविध प्रकार की समस्याओं एवं चुनौतियों का ही इतिहास रहा है। प्रत्येक सभ्य–असभ्य, शिक्षित–अशिक्षित, विकसित–विकासशील समाज में कुछ न कुछ सामाजिक समस्याएँ सदैव विद्यमान रही हैं और आज भी हैं तथा इन्हीं समस्याओं को सामाजिक विघटन का प्रमुख कारण माना जाता है।

विभिन्न स्तरों पर विविधताओं के कारण भारतीय समाज में कई सामाजिक समस्याएं उत्पन हुई है। जो समाज के लिए घातक है। यह सामाजिक समस्याएं निम्न हैः– क्षेत्रवाद और क्षेत्रीय विवाद, निर्धनता, वर्ण व्यवस्था, भेदभाव की स्थिति, छुआछूत की समस्या, राजनैतिक पतन, समाज में स्त्रियों के प्रति हीन भावना और अपराध, आतंकवाद, आपसी हिंसा, अंधाधुंध नगरीकरण, अपराध, आरक्षण के लिए की गयी हिंसा इत्यादि हैं। जिनका जल्दी से जल्दी निवारण किया जाना आवश्यक है।

इन सामाजिक समस्याओं को दूर करने हेतु समाज सुधारकों एवं फिल्मों द्वारा प्रयास किए गए है तथा महिलाओं को महिला सशक्तिकरण की तरफ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया।

सामाजिक समस्या को दूर करने हेतु कुछ फिल्में निम्न हैः–

दुर्गामति, शुभ मंगल सावधान, न्यूटन, टॉयलेट एक प्रेमकथा, सुई–धागा

पैडमैन, माय ब्रदर, मातृभूमि, मसान, लक्ष्मी, प्रेम रोग, फायर, क्या कहना, विकी डोनर, आरक्षण, उड़ता पंजाब, पिंक, हिंदी मीडियम, ओह माय गॉड आदि कई फिल्मों ने सामाजिक समस्याओं को दूर करने हेतु लोगों को जागरूक किया और समाज को रोशनी दिखाने का कार्य किया।

मानव समाज के इतिहास को यदि गहराई से देखा जाए तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह विविध प्रकार की समस्याओं एवं चुनौतियों का ही इतिहास रहा है। प्रत्येक सभ्य – असभ्य, शिक्षित– अशिक्षित, विकसित–विकासशील समाज में कुछ न कुछ सामाजिक समस्याएँ सदैव विद्यमान रही हैं और आज भी हैं तथा इन्हीं समस्याओं को सामाजिक विघटन का प्रमुख कारण माना जाता है। किसी भी समाज में स्थायित्व एवं निरन्तरता हेतु इन समस्याओं का समाधान किया जाना आवश्यक माना जाता है।

सामाजिक समस्या वह स्तिथि या दशा है जिसे समाज हानि कारक मानता है। तथा उसके समाधान की आवश्यकता महसूस करता है।

सामाजिक समस्या वह अवांछनीय स्थिति है जिसे सुधारने का प्रयास किया जाता है। यदि कोई समस्या अवांछनीय तो है परन्तु समाज के सदस्य उसमें किसी प्रकार के सुधार की न तो आशा करते हैं और न ही प्रयास करते हैं तो ऐसी समस्या सामाजिक समस्या नहीं कही जाएगी।

सामाजिक समस्या समाज कल्याण की धारणा से सम्बन्धित होती है। समाज कल्याण को अवरुद्ध करने वाली समस्याएँ ही अधिकतर सामाजिक समस्याएँ मानी जाती हैं।

Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252002

सामाजिक समस्या की उत्पत्ति अनेक कारणों से होती है। जब सामाजिक संगठन में सामंजस्य समाप्त हो जाता है और समाज द्वारा प्रचलित मूल्यों, आदर्शों व नियमों में अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो सामाजिक समस्या जन्म लेती है।

सामाजिक समस्याएँ मनुष्यों के व्यवहार, जोकि अनेक प्राणिशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक कारकों पर निर्भर करता है, में परिवर्तन के कारण उत्पन्न होती हैं। यदि व्यवहार सामाजिक मूल्यों के विरुद्ध होने लगता है तो सामाजिक समस्याएँ पैदा होने लगती हैं। सामाजिक परिवर्तन की तीव्र गति के कारण प्रायः सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं क्योंकि कई बार व्यक्ति नवीन परिस्थितियों से अनुकूलन करने में असमर्थ होते हैं।

विभिन्न स्तरों पर विविधताओं के कारण उत्पन्न सामाजिक समस्याएं :–

1 क्षेत्रवाद और क्षेत्रीय विवाद – भाषा के आधार पर प्रदेशों के बनने के कारण क्षेत्रीयता का प्रभाव बढ़ा है। किसी विशेष प्रदेश के निवासी भाषायी या अन्य आधारों पर अन्य प्रदेश के निवासियों से स्वयं को अलग मानते हैं और उनके प्रति विद्वेष रखते हैं और समय–समय पर हिंसा का प्रदर्शन एक–दूसरे के खिलाफ करते रहते हैं जो राष्ट्रीय प्रगति और राष्ट्र बंधुत्व के खिलाफ है।

2 निर्धनता – यह एक बहुत बड़ी परेशानी के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है। जिसकी वजह से लोग रोटी, कपड़ा मकान जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित हो जाते हैं। उनमें असुरक्षा की भावना विकसित होती है, जिसकी वजह से चरित्र में भी गिरावट देखी जाती है।

3 वर्ण व्यवस्था – भारतीय समाज वर्ण व्यवस्था के आधार पर बंद समाज बन गया था। जिसमें गतिशीलता का अभाव हो गया था इसके अंतर्गत पिछड़े वर्ग के लोगों के साथ अस्पृश्यता का व्यवहार किया जाने लगा है। उच्च वर्ग के लोग अधिक से अधिक सामाजिक संसाधनों पर अपना अधिकार कर के बैठे हुए है। और उसके अलावा निम्न वर्ग का शोषण बहुत अधिक होने लगा है।

4 भेदभाव की स्थिति – अपने ही देश में विभिन अंतरों के कारण देश के निवासियों को भेदभाव की स्थिति का सामना करना पड़ता है। धार्मिक, प्रजाति, जाति, नस्ल, भाषा, लिंग आदि के आधार पर विभिन्न स्थानों पर भेदभाव किया जाता है।

5 छुआछूत की समस्या – धर्म और जाति के आधार पर छुआछूत की भावना हमारे देश में कोई नई नहीं है। भारतीय संविधान और भारतीय कानून के अनुसार यह एक दंडनीय अपराध है और बदलते समय के साथ लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आया है पर फिर भी यह समस्या पूरी तरह से हल नहीं हुई है। आज भी कम पढ़े–लिखे और गाँवों में छुआछूत की भावना देखी जा सकती है।

6 राजनैतिक पतन – किसी देश की राजनीति उस देश को प्रगति के पथ पर ले जाति है बशर्ते वह स्वस्थ राजनीति हो। कोई भी राजनीति दल विकास के लिए योजनायें बनाता है और जिसके आधार पर देश की जनता उस दल को चुनकर शासन उसके हाथ में देती है। परन्तु हमारे देश में राजनीति का आधार विकास योजनायें नहीं बल्कि जातिगत राजनीति हैं। एक विशेष जाति के लोग अपनी जाति के लोगों को चुनकर सत्ता में भेजना चाहते हैं जो राजनीति का पतन है। और राजनीतिक दल भी यह समझते हुए जातिगत समीकरण बनाते और भुनाते हैं।

Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10252002

7 समाज में स्त्रियों के प्रति हीन भावना और अपराध – भारत में पुरुष को समाज में स्त्रियों की तुलना में श्रेष्ठ माना जाता है और उन्हें तरजीह दी जाती है। आज भी परिवारों में पुत्रजन्म पर लोग उल्लास मनाते हैं और पुत्री होने पर दुखी होते हैं। इसके पीछे कारण स्त्रियों की समाज में स्थिति ही है। या दोनों कारण एक–दूसरे को परस्पर प्रभावित करते हैं। लोगों की मानसिकता बदल तो रही है पर लोग इस मानसिकता से पूरी तरह मुक्त नहीं हुए हैं। दूसरी ओर औद्योगीकरण वैश्वीकरण और नगरीकरण के कारण सांस्कृतिक अंतराल (cultural lag) की स्थिति उत्पन्न हो गयी है और जिसके कारण स्त्रियों के प्रति दिन प्रतिदिन अपराध बढ़ रहे हैं।

विविधता के कारण भारतीय समाज को अन्य जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है वह निम्न हैः–

आतंकवाद, आपसी हिंसा, अंधाधुंध नगरीकरण, अपराध, आरक्षण के लिए की गयी हिंसा इत्यादि हैं। जिनका जल्दी से जल्दी निवारण किया जाना आवश्यक है।

सामाजिक व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए हम पाते हैं कि स्त्रियों को चारदीवारी तक सीमित कर उनको उनके अधिकारों से वंचित कर दिया गया है। यह एक उपभोग की वस्तु मात्र बनकर रह गई है। उन्हें शिक्षा का अधिकार देने के लिए विभिन्न कई समाज सुधारको तथा फिल्मों द्वारा प्रयास किए गए व महिला सशक्तिकरण की तरफ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया।

इन सामाजिक समस्याओं को दूर करने में फिल्मों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

फिल्में समाज के दर्पण के समान होती है। अगर ये कथन सत्य है तो फिर तो हमारा देश घोर संकट में है, क्योंकि यहां जिन फिल्मों को सम्मान की दृष्टि से देखना चाहिए, उन्हें बुद्धिजीवी और कभी–कभी तो जनता तक नहीं स्वीकारती। परंतु कुछ फिल्में ऐसी होती है जिनके बारे में इतने प्रशंसा के पुल बांध दिए जाते हैं।

एक समय था जब ज्यादातर हिंदी फिल्में महज पैसा कमाने को ध्यान में रखकर बनाई जा रही थी। उन्हें किसी फार्मूले की तलाश रहती थी, जो बॉक्स आफिस (BOX OFFICE) पर हिट (HIT) हो जाए और अच्छा पैसा कमा कर दे दे।

लेकिन पिछले कुछ समय से समाज सुधार के लिए जागरुकता फैलाने वाली फिल्में खूब बनाई जा रही हैं और इसमें बॉलीवुड के बड़े सितारे भी हिस्सा ले रहे है। इनके माध्यम से लोगों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए सामाजिक मुद्दों को उठाया जा रहा है।

पिछले कुछ समय से समाज सुधार के लिए जागरुकता फैलाने हेतु कई फिल्मों का निर्माण हुआ।

सामाजिक मुद्दों पर बनी इन फिल्मों के जरिए बॉलीवुड स्टार्स ने लोगों को बड़ा संदेश दिया है।

यह फिल्में सामाजिक मुद्दों पर रोशनी डालने के साथ–साथ सीखाती है कि जिंदगी मे हर परेशानी का हल निकाला जा सकता है, चाहे वह कोरोना जैसी महामारी ही क्यों ना हो।

सामाजिक समस्या को दूर करने हेतु कुछ फिल्में निम्न हैः–

1 दुर्गामतिः– इस फिल्म में बतलाया गया है कि कैसे सरकारी तंत्र मे फैले भ्रष्टाचार को कम किया जा सकता है। ये फिल्म तेलुगु तमिल फिल्म 'भागमती' की रीमेक फिल्म है। जिसमें एक महिला सरकारी अफसर इमानदारी की मिसाल बनती है और भ्रष्टाचारी नेता को सबके सामने लाती है।

2 शुभ मंगल सावधानः– फिल्म में समलैंगिक रिलेशनशिप को लेकर समाज के नजरिए को दिखाया गया है। यह फिल्म आयुष्मान खुराना और भूमि पेडनेकर अभिनीत एक ऐसे जोड़े की कहानी है, जिन्हें पता लगता है कि लड़का इरेक्टाइल डिस्फंक्शन (ईडी) से पीड़ित है, जो एक आम बीमारी है। लेकिन अभी भी सोसाइटी में इसे टैबू माना जाता है, जिसे दूर करना बेहद जरूरी है।

3 न्यूटनः– यह फिल्म समाज में बहुत ही प्रासंगिक संदेश छोड़ती है। मतदान हमारे देश का ज्वलंत मुद्दा रहा है। इस फिल्म में भी मतदान के दौरान होने वाली हेराफेरी को दिखाया गया है।

4 टॉयलेट एक प्रेमकथाः– शौचालय पर आधारित इस फिल्म में स्वच्छ भारत अभियान की झलक साफ देखने को मिलती है। देश के कई हिस्सो में आज भी महिलाएं खुले में शौच करने के लिए मजबूर हैं क्योंकि सरकारी अधिकारियों, बाबुओं की गड़बड़ी के चलते शौचालय का निर्माण अधर में लटक जाता है। इसमें मुख्य अभिनेता अक्षय कुमार पर जब इस कुरीति की मार पड़ती है तो वह गांव में शौचालय बनवाने के लिए नये–नये तरीके अपनाते हैं।

यह फिल्म महिलाओं को ही नहीं बल्कि पुरुषों को भी ये नसीहत देती हैं कि वह खुले में शौच से बचे ताकि हेल्थ अच्छी रह सके।

5 सुई–धागाः– यह फिल्म श्मेक इन इडियाश अभियान को दर्शाती है। फिल्म के जरिए लोगों तक मेक इन इंडिया के संदेश को पहुंचाने की कोशिश की गई है। फिल्म में अभिनेता वरुण धवन पत्नी अनुष्का शर्मा संग दिन–रात मेहनत कर खुद का बनाया हुआ उत्पाद बाजार में लाते है। इस फिल्म के द्वारा 'मेड इन चाइना' उत्पादों पर करारा तंज कसने की भी कोशिश की गई है।

6 पैडमैनः– यह फिल्म बहुत ही संवेदनशील विषय पर बनी फिल्म है। फिल्म अरुणाचलम के मुरुगुनांथम नामक व्यक्ति की असल कहानी पर आधारित है। इस फिल्म में अक्षय कुमार ने इस व्यक्ति का किरदार बखूबी निभाया है। जो गांव–कस्बे की लड़कियों और महिलाओं के लिए सस्ते सेनेटरी नैपकिन तैयार कर उन्हें इसके इस्तेमाल और फायदे बताने की कोशिश करता है। साथ ही इसके ना इस्तेमाल करने से होने वाले नुकसान भी इस फिल्म में बताए गए।

7 माय ब्रदरः– इस फिल्म में होमोसेक्शुऐलिटी और HIV/AIDS जैसे टॉपिक को बेहद खूबसूरती से दिखाया गया है। ये पहली बार था जब इन दोनों विषयों को इस अंदाज में पर्दे पर लाया गया कि कैसे एक लड़के को HIV पॉजिटिव पाए जाने पर घर से निकाल दिया जाता है। उसकी जिंदगी पूरी तरह बदल जाती है। लोगों की सोच में बदलाव लाने के लिए एवं लोगों को जागरूक करने हेतु इस फिल्म का निर्माण किया गया।

8 मातृभूमिः– इस फिल्म ऐसे समाज की कल्पना की गई जहां औरतों की संख्या कम होते होते ना के बराबर बची थी। ऐसे में आदमियों को शादी और परिवार के लिए लड़कियां नहीं मिल रही थी। जिससे बढ़ते अपराधों को इस फिल्म में दिखाए गया है।

इस फिल्म में लड़कियों को भ्रूण में ही मार देने की वजह से पैदा हुई ये स्थिति रोंगटे खड़े करने वाली है।

9 मसानः— सामाजिक छुआ छूत और भेदभाव को दर्शाती एक बेहतरीन फिल्म ळें

10 लक्ष्मीः— मानव तस्करी और जबरन वेश्यावृत्ति में झोंक देने वाली लड़कियों के जीवन पर बनी झकझोर देने वाली फिल्म है।

11 प्रेम रोगः— यह फिल्म विधवा विवाह पर आधारित फिल्म है। इसमें जाति व्यवस्था और समाज में औरतों की दुर्दशा को भी दिखाया गया है।

12 फायरः— इस्मत चुगतई के उपन्यास शलिहाफश पर बनी यह फिल्म होमोसेक्सुअल संबंधों को लेकर समाज के दोहरे मापदंडों पर है।

13 क्या कहनाः— प्रीति जिंटा और सैफ अली की इस फिल्म में टीनएज अनमैरिड लड़की की प्रेग्नेंसी जैसे अहम मुद्दे को दिखाया गया है।

14 विकी डोनरः— फिल्म में आयुष्मान खुराना स्पर्म डोनर होते हैं। निःसंतान दंपतियों को केंद्र में रखकर बनाई गई फिल्म है।

15 आरक्षणः— आरक्षण के प्रति समाज के एक तबके की सोच और प्रभावित लोगों के आक्रोश को इस फिल्म में दिखाया गया है।

16 उड़ता पंजाबः— इस फिल्म में ड्रग्स की चपेट में बर्बाद होते युवाओं की कहानी के जरिए समाज को नशा के खिलाफ संदेश दिया गया है।

17 पिंकः— पिंक फिल्म में उस पुरुषवादी मानसिकता पर कटाक्ष है, जिसके आधार पर लड़कियों का चरित्र तय किया जाता है।

18 हिंदी मीडियमः— यह फिल्म महानगरों के बड़े इंग्लिश स्कूलों में बच्चों के एडमिशन कराने को लेकर होने वाली समस्या पर केंद्रित है।

19 ओह माय गॉडः— यह फिल्म धर्म के नाम पर पाखंड फैलाने और व्यवसाय करने वाले लोगों पर खूबसूरती से कटाक्ष करती है।

निष्कर्ष :—

मानव समाज के इतिहास को यदि गहराई से देखा जाए तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह विविध प्रकार की समस्याओं एवं चुनौतियों का ही इतिहास रहा है। प्रत्येक सभ्य–असभ्य, शिक्षित–अशिक्षित, विकसित–विकासशील समाज में कुछ न कुछ सामाजिक समस्याएँ सदैव विद्यमान रही हैं और आज भी हैं तथा इन्हीं समस्याओं को सामाजिक विघटन का प्रमुख कारण माना जाता है। किसी भी समाज में स्थायित्व एवं निरन्तरता हेतु इन समस्याओं का समाधान किया जाना आवश्यक माना जाता है।

क्षेत्रवाद और क्षेत्रीय विवाद, निर्धनता, वर्ण व्यवस्था, भेदभाव की स्थिति, छुआछूत की समस्या, राजनैतिक पतन, समाज में स्त्रियों के प्रति हीन भावना और अपराध, आतंकवाद, आपसी हिंसा, अंधाधुंध नगरीकरण, अपराध, आरक्षण के लिए की गयी हिंसा इत्यादि सामाजिक समस्याएं हैं। जिनका जल्दी से जल्दी निवारण किया जाना आवश्यक है।

इन सामाजिक समस्याओं को दूर करने हेतु समाज सुधारकों एवं फिल्मों द्वारा प्रयास किए गए है तथा महिलाओं को महिला सशक्तिकरण की तरफ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया।

सामाजिक मुद्दों पर बनी इन फिल्मों के जरिए बॉलीवुड स्टार्स ने लोगों को बड़ा संदेश दिया है।

यह फिल्में सामाजिक मुद्दों पर रोशनी डालने के साथ–साथ सीखाती है कि जिंदगी मे हर परेशानी का हल निकाला जा सकता है। सामाजिक समस्या के प्रति कई फिल्मों का निर्माण हुआ जैसे कि दुर्गामति, शुभ मंगल सावधान, न्यूटन, टॉयलेट एक प्रेमकथा, सुई–धागा

पैडमैन, माय ब्रदर, मातृभूमि, मसान, लक्ष्मी, प्रेम रोग, फायर, क्या कहना, विकी डोनर, आरक्षण, उड़ता पंजाब, पिंक, हिंदी मीडियम, ओह माय गॉड आदि कई फिल्मों ने सामाजिक समस्याओं को दूर करने हेतु लोगों को जागरूक किया और समाज को रोशनी दिखाने का कार्य किया।

संदर्भः–

1. BED, समकालीन भारत एवं शिक्षक शिक्षा, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।

2. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (2009)

3. टीचर्स जर्नल्स

4. ओम प्रकाश – भारत में शिक्षा का मूल अधिकार, कल्याण पब्लिकेशन, जयपुर

5. योजना हिन्दी पत्रिका

6. भारत 2022 – वार्षिक संदर्भ ग्रंथ, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार

7. https://www.amarujala.com

8. https://www.nibandh.com

9. https://www.samacharnama.com